nwda.gov.in

# कुमाऊं पर मंडरा रहा बड़ा खतरा, ग्लेशियरों के पास बनीं 77 झीलें

■ विशेष संवाददाता, नैनीताल

उत्तराखंड के कुमाऊं इलाके में एक बड़ा खतरा मंडरा रहा है। ऊंचाई वाले इलाकों में मौजूद ग्लेशियरों के आसपास 77 झीलें बनी हुई हैं। अगर गर्मी ज्यादा पड़ी और इन झीलों की दीवारें टूटी तो बड़ी आपदा आ सकती है। ठीक वैसी ही जैसे केदारनाथ और चमोली में आई थी। कुमाऊं यूनिवर्सिटी के भूगोल विभाग के प्रफेसर डॉ. डी. एस. परिहार ने GIS रिमोट सेंसिंग और सैटलाइट डेटा से ग्लेशियरों की स्टडी की।

उनकी स्टडी में इस बात का खुलासा हुआ है कि ग्लेशियरों में और उनके आसपास 50 मीटर से भी अधिक

अब भी बनती जा रही हैं नई झीलें।

व्यास की कई ग्लेशियर झीलें बन चुकी हैं। भूकंपीय गतिविधियों या ज्यादा गर्म तापमान की वजह से इन झीलों की दीवारें टूट सकती हैं। इनसे पैदा होने वाली बाढ़ को ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (GLOF) कहते हैं। अगर ये फटती हैं तो निचले इलाकों में मौजूद शहरों, कस्बों और गांवों में भारी तबाही आ सकती है। कुमाऊं के निचले इलाकों में यह खतरा बरकरार है।

प्रफेसर परिहार ने बताया कि ग्लेशियरों के आसपास कुल 77 झीले हैं। इनकी व्यास 50 मीटर से ज्यादा है। इसमें 36 सबसे ज्यादा झीलें मिलम ग्लेशियर, 25 झीले रालम ग्लेशियर, सात झीलें गोखां ग्लेशियर, छह झीलें मार्तोली ग्लेशियर और तीन झीलें लवां ग्लेशियर के आसपास मौजूद हैं। नई झीलें अब भी बनती जा रही हैं। सबसे बड़ी झील गोखां ग्लेशियर पर है। जिसका व्यास 2.78 किलोमीटर है। स्टडी में सलाह दी गई है कि ग्लेशियरों से लगे इलाकों में बड़ी घटना ना हो इसके लिए विस्थापन समेत दूसरे इंतजाम समय रहते करने होंगे।